



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 563]

नई दिल्ली, भूहस्तपतिवार, अक्टूबर 26, 1989/कार्तिक 4, 1911

No. 563] NEW DELHI, THURSDAY, OCTOBER 26, 1989/KARTIKA 4, 1911

इस भाग के भिन्न पृष्ठ संख्या वी जाती है जिससे कि यह संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

कार्मिक, लोक गिरियात और पेशन मंत्रालय

(कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग)

प्रधिकारिता:

नई दिल्ली, 26 अक्टूबर, 1989

मा० का० नि० 928(ग्र) — केन्द्रीय सरकार, प्रशासनिक
प्रधिकारण अधिनियम, 1985 (1985 का 13) की धारा 4
की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त जक्षियों का प्रयोग करते हुए,
इस मंत्रालय में आन्ध्र प्रदेश सरकार से प्राप्त ग्रन्तीध के आधार
पर 1 नवम्बर, 1989 से आन्ध्र प्रदेश प्रशासनिक प्रधिकारण
की एनदब्ल्यूआर स्थापना करनी है जो कि इस अधिनियम के
खण्ड 3 की धारा (ग) के प्रयोजन से "नियत दिन" होगा।

MINISTRY OF PERSONNEL, PUBLIC GRIEVANCES
AND PENSIONS

(Department of Personnel and Training)

NOTIFICATIONS

New Delhi, the 26th October, 1989

G.S.R. 928 (E); - In exercise of the powers conferred by
sub-section (2) of section 4 of the Administrative Tribunals
Act, 1985 (13 of 1985), the Central Government on receipt
of a request in this behalf from the Government of Andhra
Pradesh hereby establishes the Andhra Pradesh Administrative
Tribunal with effect from the 1st day of November, 1989
which shall be the 'appointed day' within the meaning of
clause (c) of section 3 of the Act.

[संख्या ए-11019/9/88-(i)-एटी.]

[No. A-11019/9/88 (i)-AT]

सं० का० नि० 929(अ) — केन्द्रीय सरकार, प्रशासनिक अधिकरण अधिनियम, 1985 (1985 का 13) की धारा 35 की उपधारा (2) के खंड (ब), (इ) और (च) के साथ पठित, उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए, निम्नलिखित नियम बनाती है, अर्थात् :—

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ :— (1) इन नियमों का नाम आन्ध्र प्रदेश प्रशासनिक अधिकरण (कार्यविधि) नियमावली, 1989 है।

(2) ये नियम सरकारी राजपत्र में इनके प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

2. परिभाषाएँ :— इन नियमों में जब तक कि संदर्भ में अन्यथा अपेक्षित न हो —

(क) “अधिनियम” से प्रशासनिक अधिकरण अधिनियम, 1985 (1985 का 13) अभिप्रेत है;

(ख) “अभिकर्ता” से किसी पक्षकार द्वारा अपनी ओर से अधिकरण के समक्ष आवेदन या लिखित उत्तर प्रस्तुत करने के लिए सम्यक रूप से प्राधिकृत किया गया कोई व्यक्ति अभिप्रेत है;

(ग) “आवेदक” से धारा 19 के अधीन अधिकरण को आवेदन करने वाला कोई व्यक्ति अभिप्रेत है;

(घ) “प्रपत्र” से परिणिष्ट “क” में निर्दिष्ट प्रपत्र अभिप्रेत है;

(इ) “विधि व्यवसायी” का वही अर्थ होगा जो उसका अधिवक्ता अधिनियम, 1961 (1961 का 25) में है।

(च) “विधिक प्रतिनिधि” से मतृक की संपत्ति का कानूनी तौर पर प्रतिनिधित्व करने वाला व्यक्ति अभिप्रेत है;

(छ) अधिकरण के संदर्भ में “रजिस्ट्रार” उस रजिस्ट्रार से अभिप्रेत है जिसे प्रधान न्यायपीठ में नियुक्त किया गया हो और अधिकरण को अन्य न्यायपीठों के संदर्भ में प्रत्येक न्यायपीठ से संबद्ध ऐसा रजिस्ट्रार अभिप्रेत है जिसे न्यायपीठ विशेष में नियुक्त किया गया हो और इसके अंतर्गत ऐसा कोई अधिकारी भी है जिसको नियम 28 की धारा (2) और (3) के अधीन रजिस्ट्रार की शक्तियां और कृत्य प्रत्यायोजित किए जाएं;

(ज) “रजिस्ट्री” से स्थित अनुसार अधिकरण की अथवा अधिकरण की न्यायपीठ की रजिस्ट्री अभिप्रेत है;

(झ) “धारा” में अधिनियम की धारा अभिप्रेत है;

(ञ) “अन्तरित आवेदन” से ऐसा वाद या अन्य कार्यवाही अधिप्रेत है जो धारा 29 की उपधारा (1) अथवा उपधारा (2) के अधीन अधिकरण को अन्तरित की गई है;

(ट) “अधिकरण” में अधिनियम की धारा 4 की उपधारा

(2) के अंतर्गत स्थापित आन्ध्र प्रदेश प्रशासनिक अधिकरण अभिप्रेत है;

(ठ) इसमें जिन शब्दों एवं अभिव्यक्तियों को इस्तेमाल नो किया गया है किन्तु जिन्हें इन नियमों में परिभाषित नहीं किया गया किन्तु जिन की परिभाषाएं अधिनियम में दी गई हैं उनका क्रमशः वही अर्थ होगा जो कि अधिनियम में उन्हें दिया गया है।

3. अधिकरण की भाषा :— अधिकरण की भाषा अंग्रेजी होगी :

परन्तु अधिकरण के समक्ष किसी कार्यवाही के पक्षकार यदि ऐसा चाहे तो तेलगु में तैयार की गई दस्तावेज भी फाइल कर सकेंगे :

परन्तु यह और कि न्यायपीठ अपने विवेकानुसार कार्यवाहियों में तेलगु का प्रयोग अनुज्ञान कर सकेंगी किन्तु अंतिम आदेश अंग्रेजी में होगा।

(ख) मामले की मूलवाई करने वाली न्यायपीठ अपने विवेकानुसार पेश की जाने वाली दस्तीलों और दायर किए जाने वाले दस्तावेजों का भीधे ही अंग्रेजी अनुवाद करने का आदेश दे सकती है।

4. आवेदन फाइल करने की प्रक्रिया :— (1) अधिकरण को आवेदन आवेदक द्वारा व्यक्तिगत रूप से या किसी अभिकर्ता द्वारा या सम्यकतः प्राधिकृत अधिवक्ता द्वारा रजिस्ट्रार को आवेदन पत्र प्राप्त करने के लिए रजिस्ट्रार द्वारा लिखित रूप से प्राधिकृत किसी अन्य अधिकारी को प्रस्तुत किया जाएगा या रसीदी रजिस्ट्री डाक द्वारा संबोधित न्यायपीठ के रजिस्ट्रार को सबोधित करके भेजा जाएगा।

(2) उपनियम (1) के अधीन आवेदन फाइल के आकार के एक कोरे लिफाके के साथ जिस पर प्रत्यर्थी का पूरा पता हो, एक अभिलेख पुस्तिका प्रस्तुत में तीन पूर्ण मीटों से प्रस्तुत किया जाएगा।

(3) जहां प्रत्यर्थियों की संख्या एक से अधिक है, वहां आवेदक द्वारा फाइल के आधार से अपेक्षित माल्या में कोरे लिफाकों के साथ जिन पर प्रत्येक प्रत्यर्थी का पूर्ण पता होगा, प्रत्यर्थियों की संख्या के बराबर अभिलेख पुस्तिका प्रस्तुत में आवेदन पत्र के अतिरिक्त प्रतिया प्रस्तुत की जाएंगी :

परन्तु जहां प्रत्यर्थियों की संख्या पांच से अधिक हो वहां रजिस्ट्रार प्रत्यर्थियों को नोटिस जारी करने समय आवेदक को आवेदन के अतिरिक्त प्रतिया दायर करने की अनुमति दे सकता है।

(4) आवेदक अपने आवेदन के साथ प्रस्तुत 11 में एक रसीदी पर्ची मंलग्न करेगा जिस पर आवेदन पत्र की प्राप्ति की पावती के रूप में रजिस्ट्रार द्वारा अथवा रजिस्ट्रार की ओर से आवेदन पत्र प्राप्त करने वाले अधिकारी द्वारा हस्ताक्षर किए जाएंगे।

5. (क) उपनियम (1) से (3) में दी गई किसी बात के बाबजूद अधिकरण एक से अधिक व्यक्तियों को मिलकर 3 संयुक्त आवेदन पत्र दायर करने की अनुमति दे सकता है बशर्ते कि बाद के हेतुक तथा प्रार्थित राहत के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए अधिकरण इस बात से संतुष्ट हो कि मामले में उनका समान हित है।

(ख) ऐसी अनुमति एक ही आवेदन पत्र में शामिल होने के इच्छुक व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाली एसोसिएशन को भी दी जा सकती है किन्तु शर्त यह है कि आवेदन पत्र में ऐसे सभी व्यक्तियों के बर्ग/अंगी/ग्रेड विए जाएंगे, जिसकी ओर से यह दायर किया गया है।

5. आवेदनों का प्रस्तुत किया जाना और उनकी संविक्षा :

(1) रजिस्ट्रार या उसके द्वारा नियम 4 के अधीन प्राधिकृत अधिकारी प्रत्येक आवेदन पर वह तारीख पृष्ठांकित करेगा जिसको वह उस नियम के अधीन प्रस्तुत की गई है या प्रस्तुत की गई ममता गई है और उस पृष्ठांकन पर हस्ताक्षर करेगा।

(2) यदि संविक्षा पर आवेदन क्रमानुसार पाया जाता है तो वह सम्यवतः रजिस्ट्रीकृत किया जाएगा और उसे क्रम संख्यांक दिया जाएगा।

(3) यदि संविक्षा पर आवेदन त्रुटिहरू पाया जाता है। और दृष्टिगत त्रुटि प्ररूपित प्रकृति की है, तो रजिस्टर अपनी उपस्थिति में उस त्रुटि का परिशोधन करने के लिए पक्षाकार को अनुज्ञात कर सकेगा और यदि उस त्रुटि प्ररूपित प्रकृति की नहीं है तो रजिस्ट्रार त्रुटि का परिशोधन करने के लिए आवेदन को ऐसा समय अनुज्ञाय कर सकेगा जो यह ठोक समझे।

(4) यदि सबूद्ध आवेदक उपनियम (3) के अधीन अनुज्ञात समय के भीतर त्रुटि का परिशोधन करने में असकल रहना है तो रजिस्ट्रार ऐसे कारणों में जिन्हें लेखबूद्ध किया जाएगा, आदेश द्वारा आवेदन को रजिस्टर करने के इंकार कर सकेगा और आवेदक को तदनुसार सूचित कर देगा।

(5) उपनियम (4) के अधीन पारित किसी आदेश के विरुद्ध अपील व्यक्ति द्वारा, ऐसे आदेश की तारीख से 15 दिन के भीतर प्रधान न्यायपीठ के मामले में अध्यक्ष को, और किसी अन्य न्यायपीठ के मामले में संबंधित उपाध्यक्ष को की जाएगी; तथा

ऐसी अपील पर संबंधित अध्यक्ष अथवा उपाध्यक्ष द्वारा अथवा उनकी अनुपस्थिति में अध्यक्ष द्वारा किसी विशेष अथवा सामान्य आदेश के माध्यम से प्रधिकृत किसी सदस्य द्वारा, चैम्बर में ही कार्रवाई की जा सकती है तथा उसका निपटान किया जा सकता है, और उस अपील पर उम्मीदिय अंतिम होगा।

6. आवेदन फाइल करने का स्थान :—आवेदक द्वारा मामान्यतः आवेदन पत्र न्यायपीठ के रजिस्ट्रार के पास दायर किया जाएगा जिसके क्षेत्राधिकार में (i) आवेदक फिलहाल

तैनात है; (ii) कार्रवाई का हेतुक पैदा हुआ है; अथवा (iii) सामान्यतः प्रत्यर्थी अथवा प्रत्यर्थियों में से कोई, जिनसे राहत मांगी गई है, रहता है:

परन्तु शर्त यह है कि ऐसा आवेदन अधिनियम की धारा 25 के अध्यधीन प्रधान न्यायपीठ के रजिस्ट्रार के यहां दायर किया जा सकता है ऐसे आवेदन पर सुनवाई तथा उसका निपटान उस न्यायपीठ द्वारा की जाएगी/किया जाएगा जिसके क्षेत्राधिकार में यह मामला श्राता है।

7. आवेदन फीस :—रजिस्ट्रार के पास फाइल किए गए प्रत्येक आवेदन के साथ 50 रुपये की फीस संलग्न की जाएगी और फीस संबंधित न्यायपीठ के रजिस्ट्रार के पक्ष में किसी राष्ट्रीयकृत बैंक पर लिखे और उस स्टेशन पर बैंक की प्रमुख शाखा में देय, जहां न्यायपीठ स्थित है, क्रास मांगदेय ड्राफ्ट से प्ररूप में प्रेषित की जाएगी या संबंधित न्यायपीठ के रजिस्ट्रार के पक्ष में लिखे और उस स्टेशन के डाक घर में, जहां कि उक्त न्यायपीठ अवस्थित है, देय क्रास भारतीय पोस्टल ऑर्डर के द्वारा प्रेषित की जाएगी :

परन्तु जहां अधिकरण या तो एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा अथवा किसी एसोसिएशन द्वारा एक ही आवेदन पत्र दायर करने की अनुमति देता है तो देय फीस पचास रुपये होगी।

परन्तु आगे जहां अधिकरण इस बात से संतुष्ट हो जाती है कि आवेदक निर्धनता के अधार पर निर्धारित शुल्क का भुगतान करने में असमर्थ है तो अधिकरण ऐसे आवेदक को शुल्क के भुगतान की छूट दे सकता है।

8. आवेदन पत्र की विषय वस्तु :

(1) नियम 4 के अधीन फाइल किए गए प्रत्येक आवेदन में सुधिन मदों के अधीन संविष्टतः ऐसे आवेदन के अधीनों को उपर्याप्त किया जाएगा। ऐसे आधार क्रमशः संचारांकित किए जाएंगे। किसी भी प्रकीर्ण आवेदन सहित, प्रयोक्त आवेदन, अच्छे किसम के मोटे कागज के एक तरफ दोहरी लाइनों में टक्कित किए जाएंगे।

(2) अन्तरिम आदेश ग्रा निदेश मांगने के लिए पृथक आवेदन प्रस्तुत करना आवश्यक नहीं होगा। यदि मूल आवेदन में अन्तरिम आदेश या निदेश मांगने का निवेदन किया गया है।

(3) कोई आवेदक अधिनियम की धारा 19 के अधीन आवेदन पत्र दायर करने के बाद अन्तरिम आदेश अथवा निदेश के लिए आवेदन कर सकता है। ऐसा आवेदन पत्र यथासंभव प्ररूप - III में होगा।

9. आवेदन के साथ भेजे जाने वाले दस्तावेज़ :—(1) प्रत्येक आवेदन के साथ एक अभिलेख पुस्तका संलग्न होगी जिसमें निम्नलिखित होंगे :—

(i) उस आदेश की प्रमाणित प्रति जिसके विरुद्ध आवेदन फाइल किया गया है;

(ii) ऐसे सभी दस्तावेजों की प्रतियां जिनका आवेदन द्वारा अवलंब लिया गया है और जिनका आवेदन में उल्लेख किया गया है; और

(iii) दस्तावेजों की अनुक्रमाणिका।

(2) उपनियम (1) में निर्दिष्ट दस्तावेजों को किसी विधि व्यवसायी द्वारा अथवा राजपत्रित अधिकारी द्वारा अनु-प्रमाणित किया जाएगा तथा प्रत्येक दस्तावेज को अनुबंध क.1; क.2; क.3; तथा आगे भी इसी ढंग से श्रमबद्ध रूप में अंकित किया जाएगा।

(3) जहां आवेदन पत्र किसी अभिकर्ता द्वारा दायर किया जा रहा हो, वहां ऐसे अभिकर्ता को प्राधिकृत करने वाले दस्तावेज को भी आवेदन के साथ संलग्न किया जाएगा :

परन्तु जहां आवेदन किसी विधि व्यवसायी द्वारा दायर किया गया है तो इसके साथ संबद्ध रूप से निष्पादित “अकालतनामा” होगा।

10. अनेक उपचार.—आवेदन कार्यवाही के उद्देश्य पर अधारित होगा और इसमें एक या एक से अधिक अनु-तोषों की मांग की जा सकेगी बशर्ते कि प्रार्थित अनुतोष एक दूसरे के परिणामिक हों।

11. अधिकरण द्वारा जारी किए गए नोटिस तथा आदेशिकाओं का तामिल करना :—

(1) अधिकरण द्वारा जारी किए जाने वाला कोई भी नोटिस अथवा आदेशिक निम्नलिखित विधियों में किसी एक द्वारा तामील की जाए :—

- (i) पार्टी द्वारा स्वयं तामील ;
- (ii) बाद तामील करने वाले के माध्यम से दस्ती ;
- (iii) रसीदी रजिस्ट्री डाक द्वारा; अथवा
- (iv) ऊपर उल्लिखित किसी भी विधि से संबंधित विभागाध्यक्ष के माध्यम से।

(2) जहां अधिकरण द्वारा जारी किया गया नोटिस पार्टी द्वारा स्वयं दस्ती रूप से तामील किया जाता है, वहां वह (आवेदक) तामील किए जाने से संबंधित हनफनामें के साथ पाक्षी अधिकरण की रजिस्ट्री में दायर करेगा।

(3) उप नियम (1) में दी गई किसी बात के बावजूद भी अधिकरण प्रत्यर्थियों की संख्या तथा उनके निवास स्थानों अथवा कार्यालय स्थलों तथा अन्य परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अपने विवेक पर राज्य सरकार अथवा राज्य सरकार के किसी विभाग द्वारा नियुक्त स्थायी वकीलों को नोटिस की तामील किया जाएगा जो अधिकरण को उचित तथा सुविधाजनक प्रतीत होगा।

(4) उपनियम (1) में दी गई किसी बात के बावजूद भी अधिकरण मामले के स्वरूप तथा अत्यावश्यकता को ध्यान में रखते हुए अपने विवेक पर राज्य सरकार अथवा राज्य सरकार के किसी विभाग द्वारा नियुक्त स्थायी वकीलों को नोटिस की तामील का निवेश।

(5) अधिकरण द्वारा जारी किए गए प्रत्येक नोटिस के साथ जब तक अन्यथा आदेश न हों अभिलेख पुस्तिका के साथ आवेदन पत्र की एक प्रति होगी।

(6) प्रत्येक आवेदन ऐसे किसी आवेदन पत्र के बारे में जहां प्रत्यार्थियों की संख्या पांच से अधिक हो आदेशिकाएं तामील तथा निष्पादित किए जाने के लिए लिमिलिखित फीस देगा :—

(i) पांच से अधिक प्रत्यर्थी होने पर प्रत्येक प्रत्यर्थी के लिए पांच रुपये; अथवा

(ii) जबकि तामील ऐसी रीति से किया गया है जैसा कि उपनियम (3) के अधीन अधिकरण ने निवेश किया था तो ऐसी राशि जो तामील करने में वास्तव में व्यय हुई हो और अधिकरण द्वारा निर्धारित की गई हो।

(7) उप नियम (3) के अधीन आदेशिकाएं तामील करने अथवा निष्पादित करने के लिए फीस, फीस निर्धारित करने के आदेश की तारीख से एक सप्ताह के भीतर अथवा रजिस्ट्रार द्वारा अनुमत बढ़ाए गए समय के भीतर नियम 7 में निर्धारित किए गए तरीके से जमा कराई जाएगी।

(8) उपनियम (1) से (4) में दी गई किसी बात के होते हुए भी यदि अधिकरण इस बात से संतुष्ट हो जाता है कि आवेदन का नोटिस सभी प्रत्यार्थियों पर तामील करना समुचित रूप से व्यवहार्य नहीं है तो वह लिखित किए जाने वाले कारणों से यह निवेश दे सकता है कि आवेदन पत्र पर सुनवाई इस बात पर ध्यान दिए बिना की जाएगी कि कुछ प्रत्यर्थियों को आवेदन पत्र का नोटिस तामील नहीं किया गया है :—

बशर्ते कि किसी भी आवेदन पत्र पर सुनवाई तब तक नहीं होगी जब तक कि :—

(i) आवेदन पत्र का नोटिस केन्द्रीय सरकार अथवा राज्य सरकार पर तामील किया गया हो यदि उक्त सरकार एक प्रत्यर्थी हो ;

(ii) आवेदन पत्र का नोटिस उस प्राधिकारी पर तामील कर दिया गया है जिसने यह भादेश पास किया था जिसके विरुद्ध आवेदन पत्र दायर किया गया है; अथवा

(iii) अधिकरण द्वारा उसे संतुष्ट है कि जिन प्रत्यर्थियों पर आवेदन पत्र का नोटिस तामील नहीं किया गया है उनके हितों का उन प्रत्यर्थियों द्वारा जिन पर आवेदन पत्र का नोटिस तामील किया गया है, पर्याप्त रूप से अतिनिधित्व होता है।

12. प्रत्यर्थी द्वारा उत्तर और अम्ब दस्तावेजों का फाइल किया जाना :—

(i) प्रत्येक प्रत्यर्थी जो आवेदन का प्रतिशाद करना चाहता है उस पर आवेदन का नोटिस तामील किए जाने की तारीख के एक मास के भीतर वह रजिस्ट्रार को आवेदन पत्र

का उत्तर देने हुए अधिकारी पुस्तिका के प्रलेप में आवेदन के उत्तर की तीन प्रतियां तथा ऐसे दस्तावेज भी दायर करेगा जिनका उसने अवलंब लिया है।

(2) उपनियम (1) के अधीन दायर आवेदन के उत्तर में प्रत्यर्थी आवेदक द्वारा अपने आवेदन पत्र में दिए गए तथ्यों को विनियम स्वरूप से स्वीकार करेगा, इंकार करेगा अथवा स्पष्टीकरण देगा तथा मामले पर यथोचित निर्णय लिए जाने के लिए आवश्यक समझे जाने वाले अतिरिक्त तथ्यों का उल्लेख भी करेगा। इस पर प्रत्यर्थी द्वारा या सिविल प्रक्रिया संहिता, 1908 (1908 का 5) के नियम 15 के आदेश VI में वर्णित तौर से उसके द्वारा लिखित रूप में बकायदा प्राधिकृत किए गए सभी किसी अस्य व्यक्ति द्वारा हस्ताक्षरित और लिखित घ्यान के रूप में अनुप्रमाणित किया जाएगा।

(3) उपनियम (2) में उल्लिखित वस्तावेज भी उत्तर के साथ दायर किए जाएंगे तथा इन्हें भार 1, भार 2, भार 3 (और आगे इसी प्रकार) अंकित किया जाएगा।

(4) प्रत्यर्थी उपनियम (1) में यथा वर्णित दस्तावेजों के साथ उत्तर की एक प्रति आवेदक पर अथवा उसके विधि अवधारणी पर, यदि कोई हो, तामील करेगा और ऐसी तामील का प्रमाण रजिस्टरी में दायर करेगा।

(5) अधिकरण निर्धारित अधिकारी की समाप्ति के पश्चात उत्तर दायर करने की अनुमति दे सकता है।

13. सुनवाई की तारीख और समय का अधिसूचित किया जाना :- अधिकरण पक्षकारों को अध्यक्ष द्वारा सामान्य अथवा विशेष आवेदन द्वारा यथानिर्दिष्ट तरीके से आवेदन की सुनवाई की तारीख तथा स्थान की सूचना देगा।

14. अधिकरण की बैठक :- अधिकरण सामान्यतः अपनी बैठक हैदराबाद में आयोजित करेगा।

बासर्ते कि अधिकरण की न्यायपीठ किसी ऐसे स्थान पर हो, जो कि राज्य सरकार अधिसूचना द्वारा विनियमित करे।

परन्तु यह कि यदि किसी समय अधिकरण के अध्यक्ष का यह समाधान हो जाता है कि ऐसी परिस्थितियां विद्यमान हैं, जिससे उन्न न्यायपीठ की बैठक सामान्यतः अपनी बैठक के स्थान अथवा स्थानों को छोड़कर उसके क्षेत्रीय अधिकार के भीतर किसी भी स्थान पर होनी आवश्यक है तो ऐसी स्थिति में अध्यक्ष यह निर्देश दे सकता है कि न्यायपीठ अपनी बैठक ऐसे किसी समुचित स्थान पर, यथानिर्दिष्ट अवधि के लिए आयोजित करेगा।

15. पूर्ण न्यायपीठ—एक पूर्ण न्यायपीठ, किसी भी सद्या की कम से कम तीन सदस्यों की होनी तथा पूर्ण न्यायपीठ द्वारा निम्नलिखित मामले सुने तथा निश्चित किए जाएंगे, अर्थात्—

(i) आन्ध्र प्रदेश लोक रोजगार (स्थानीय संबंधों का संगठन तथा सीधी भर्ती का विनियमन) आवेदन, 1975 अथवा उसके अन्तर्गत बनाए गए किसी भी आवेदन के, किसी भी उपबन्धों के निर्वचन से संबंधित मामले।

(ii) राज्यों का पुनर्गठन अधिनियम, 1956 (1956 का 73) के परिणामस्वरूप, राज्य की किसी भी सेवाओं के एकीकरण से उत्पन्न होने वाले मामले।

(iii) अन्य कोई भी मामला, जो कि इसे सौंपा जाए अथवा उसे भेजा जाता है। परन्तु ऐसे मामले, अथवा मामलों में, जहां अन्तर्गत मामलों के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए, अध्यक्ष का यह मत हो कि इसमें वो से अधिक सदस्यों की एक पूर्ण न्यायपीठ, द्वारा निर्णय होने की आवश्यकता है, वह साधारण अथवा विशेष आवेदन द्वारा, जैसा भी उचित समझे, निर्णय कर सकता है।

16. मामलों का कलैडर :—

(1) प्रत्येक न्यायपीठ स्थानांतरित आवेदन पत्रों की सुनवाई के लिए एक कलैडर तैयार करेगा और यथासंभव मामलों की सुनवाई तथा निर्णय कलैडर के प्रनुसार करेगा।

(2) प्रत्येक आवेदन पत्र की सुनवाई तथा निर्णय यथासंभव इसके प्रस्तुत किए जाने के छः मास के भीतर कर लिया जाएगा।

(3) अधिकरण को यह अधिकार है कि वह किसी स्थगन के लिए भना कर दे और जबाबी दस्तीलों के लिए समय सीमित कर दे।

17. आवेदक के व्यतिक्रम के कारण आवेदन पर कार्रवाई

(1) जहां आवेदन की सुनवाई के लिए नियत तारीख को या किसी अन्य तारीख को जिसके लिए ऐसी सुनवाई स्थगित की गई हो आवेदन पर सुनवाई के लिए पुकार होने पर आवेदक हाजिर नहीं होता है वहां अधिकरण अपने विवेकानुसार या तो व्यतिक्रम के कारण आवेदन को खारिज कर सकेगा या उसकी सुनवाई करके गुणावगुण के आधार पर इसका विभिन्नत्य कर सकेगा।

(2) जहां आवेदन व्यतिक्रम के कारण खारिज कर दिया जाता है तथा आवेदक खारिज होने की सारीब के तीस दिन के भीतर एक आवेदन पत्र दायर करना है तथा अधिकरण का यह समाधान कर देता है कि उसकी उम समय गैरहाजिरी का पर्याप्त कारण या जब आवेदन की सुनवाई के लिए पुकार हुई थी, वहां अधिकरण आवेदन को खारिज करने वाले आवेदन को अपास्त करने वाला एक आवेदन करेगा और उसे बहाल करेगा :

किन्तु, शेष यह है कि जहां मामले का उसके गुणावगुण के आधार पर निष्ठान कर दिया गया था वहां पुनरीक्षा को छोड़कर निर्णय पर पुनः विचार नहीं होगा।

18. आवेदन की एकपक्षीय सुनवाई तथा निपटान :—

(1) जहां आवेदन की सुनवाई के लिए नियत तारीख को या किसी अन्य तारीख को जिसको सुनवाई स्थगित कर दी गई है, आवेदन की सुनवाई के लिए पुकार होने पर यदि आवेदक हाजिर होता है और प्रत्यर्थी हाजिर नहीं होता है तो ऐसी स्थिति में अधिकरण अपने विवेकानुसार आवेदन को स्थगित कर सकेगा या उसकी एकतरफा सुनवाई कर सकेगा और आवेदन का विभिन्नत्य कर सकेगा।

(2) जहां किसी प्रत्यर्थी अथवा प्रत्यर्थियों के विरुद्ध आवेदन पत्र की सुनवाई एकत्रफा हुई हो तो ऐसा/ऐसे प्रत्यर्थी आदेश को निरस्त करने के लिए अधिकरण से निवेदन कर सकते हैं और यदि ऐसा/ऐसे प्रत्यर्थी अधिकरण की यह संतुष्टि कर देता है/देते हैं कि नोटिस विधिवत तामील नहीं किया गया था अथवा वह/वे आवेदन की सुनवाई के समय पुकार होने पर पर्याप्त कारणों से हाजिर नहीं हो सके थे तो अधिकरण उसके/उनके विरुद्ध एकपक्षीय सुनवाई को निरस्त करने में संबंधित एक आदेश ऐसी शर्तों पर कर सकेगा जो वह उचित समझे और आवेदन पर आगे कार्रवाई के लिए कोई अन्य दिन नियत कर सकेगा :

किन्तु शर्त यह है कि जहां आवेदन पर एक तरफा सुनवाई की प्रकृति ऐसी है कि उसे केवल एक प्रत्यर्थी के संदर्भ में निरस्त नहीं किया जा सकता, वहां उसे मभी या अन्य प्रत्यर्थियों में से किसी एक के संदर्भ में भी निरस्त किया जा सकता है।

आगे यह भी शर्त है कि नियम 11 के उपनियम (8) के अधीन आने वाले मामलों में अधिकरण किसी आवेदन की एक पक्षीय सुनवाई केवल इसी आधार पर निरस्त नहीं करेगा कि इसे प्रत्यर्थी अथवा प्रत्यर्थियों पर तामील नहीं किया गया था।

19. पुनरावलोकन के लिए आवेदन का 30 दिन के भीतर फाइल किया जाना :—पुनरावलोकन के लिए किसी भी आवेदन पर तब तक विचार नहीं किया जायेगा तब तक कि वह जिस आदेश के विरुद्ध पुनरावलोकन की मांग की गई है उस आदेश की तारीख के 30 दिन के भीतर दायर नहीं किया गया हो।

20. विधिक प्रतिनिधियों का बदला जाना :—(1) अधिकरण में कार्यवाहियों के लंबित रहने के दौरान किसी पक्षकार की मृत्यु हो जाने के स्थिति में मृत पक्षकार के विधिक प्रतिनिधि ऐसी मृत्यु के 30 दिन के भीतर अनिवार्य पक्षकारों के रूप में रिकाउंट किये जाने के लिए आवेदन कर सकते हैं।

(2) जहां विधिक प्रतिनिधियों से उपनियम (1) में निर्धारित अवधि के भीतर कोई आवेदन प्राप्त नहीं होता है वहां मृत पक्षकार के विरुद्ध कार्यवाहियां उपशमनित हो जाएँगी:

किन्तु पर्याप्त और सध्यम कारणों के रहने हुए अधिकरण, आवेदन फाइल किये जाने की स्थिति में उपशमन का आदेश निरस्त कर सकेगा और विधिक प्रतिनिधियों को प्रतिस्थापित कर सकेगा।

21. सुनवाई स्थगित किया जाना :—यदि सुनवाई के दौरान पर्याप्त कारण बताये जाएं तो अधिकरण आवेदन के आधार पर पक्षकारों को या उनमें से किसी एक को समय

दे सकता है। अधिकरण ऐसा आवेदन दे सकता है जो कि वह स्थगित के कारण होने वाले खंड के संदर्भ में उचित समझता हो।

22. आदेश पर हस्ताक्षर किया जाना और उस पर तारीख डालना (i) प्रत्येक आदेश लिखित के रूप से होगा और उस पर आदेश सुनाने वाली न्यायीय का गठन करने वाल सदस्य अथवा सदस्यों द्वारा हस्ताक्षर किये जाएँगे।

(ii) ये आदेश खुली अदालत में सुनाए जाएँगे।

23. आदेशों का प्रकाशन :—यदि अधिकरण के किसी आदेश को किसी प्राधिकृत रिपोर्ट या प्रेस में प्रकाशन के लिए ठीक समझा जाए तो ऐसे निबन्धनों और शर्तों पर जहां अधिकरण किसी सामान्य या विशेष आदेश द्वारा निर्दिष्ट करे, ऐसे प्रकाशन के लिए निर्मुक्त किया जा सकेगा।

24. आदेशों का पक्षकारों को संसूचित किया जाना :—

(1) अन्तरिम राहत स्वीकार करने वाले या अस्वीकार या संशोधित करने वाले प्रत्येक अन्तिम आदेश तथा किसी आवेदन पर पारित अन्तिम आदेश आवेदक को और संबंधित प्रत्यर्थी को या तो दस्ती या रजिस्ट्री डाक द्वारा निःशुल्क संसूचित किया जाएगा;

(2) यदि कोई आवेदक या किसी कार्यवाही के प्रत्यर्थी को किसी दस्तावेज या किसी कार्यवाही की उपलब्धि की आवश्यकता हो तो उसे उक्त परिलिंग्धि अध्यक्ष द्वारा किसी सामान्य अथवा विशेष आदेश द्वारा निर्धारित फीस की अदायगी करने पर तथा अध्यक्ष द्वारा उल्लिखित निबन्धनों और शर्तों पर दे दी जाएगी।

25. अभिलेखों का निरीक्षण :—(1) रजिस्ट्रार को लिखित रूप में आवेदन किए जाने पर किसी मामले के पक्षकारों अथवा उनके वकील को मामले के अभिलेखों को निरीक्षण करने की अनुमति दी जाए।

(2) ऐसी शर्तों के अध्यधीन जो कि अध्यक्ष द्वारा किसी सामान्य अथवा विशेष आदेश द्वारा निर्धारित की जा सकती है, किसी ऐसे व्यक्ति को भी, जो कार्यवाही का पक्षकार न हो, रजिस्ट्रार मलिखित रूप में अनुमति प्राप्त करने के पश्चात कार्यवाहियों का निरीक्षण करने के लिये अनुमति दी जाये।

26. कुछ मामलों में आदेश और निर्देश :—अधिकरण ऐसे आदेश कर सकेगा या ऐसे निर्देश दे सकेगा जो उसके आदेशों को प्रभावी बनाने के लिये या उनके संबंध में या उसकी आदेशिका के दुरुपयोग के निवारण के लिये या न्याय के उद्देश्यों को सुनिश्चित करने के लिये आवश्यक या समीचीन हो।

27. विधि व्यवसायी के लिपिक का रजिस्ट्रीकरण :—

(1) किसी विधि व्यवसायी द्वारा नियोजित कोई ऐसा लिपिक तब तक उस अधिकरण के, जिसमें विधि व्यवसायी सामान्यतः विधि-व्यवसाय करना है, आदेशों के अभिलेख की पहुंच रखने और अधिकरण की न्यायपीठ के आशेषों की प्रतिया अभिप्राप्त करने के लिये अनुमति नहीं होगा जब तक कि उसका नाम-उक्त न्यायपीठ द्वास रखे गये लिपिकों के रजिस्टर में प्रविष्ट न हो। ऐसा लिपिक “रजिस्ट्रीकृत लिपिक” के रूप में जाना जायेगा।

(2) वह विधि-व्यवसायी जो अपने लिपिक का रजिस्ट्रीकरण करने का इच्छक है, फार्म-IV/में रजिस्ट्रार को आवेदन करेगा। रजिस्ट्रार द्वारा ऐसे आवेदन पत्र पर स्वीकृति दिये जाने पर उसका नाम लिपिकों के रजिस्टर में दर्ज कर लिया जायेगा।

(3) लिपिक के रजिस्ट्रीकरण के पाँचात् रजिस्ट्रार उसे एक पहचान-पत्र जारी किये जाने का निर्देश देगा जो अहस्तान्तरिणीय होगा और अधिकरण के इस निमित्त प्राधिकृत किसी अधिकारी या अन्य कर्मचारी द्वारा अनुग्रह पर धारक द्वारा प्रस्तुत किया जायगा। उक्त पहचान पत्र संबंधित न्यायपीठ के उपरजिस्ट्रार के हस्ताक्षर से जारी किया जायेगा।

(4) उप-नियम (2) के अधीन रजिस्टर किये गये सभी लिपिकों का एक रजिस्टर प्रत्येक न्यायपीठ के रजिस्ट्रार के कार्यालय में रखा जायेगा।

(5) एक विधि व्यवसायी एक समय पर दो में अधिक रजिस्ट्रीकृत लिपिक नहीं रखेगा जब तक कि रजिस्ट्रार साधारण या विशेष आदेश द्वारा अन्यथा अनुमति न करे।

(6) जब कभी कोई विधि व्यवसायी किसी रजिस्ट्रीकृत लिपिक का नियोजन समाप्त कर देता है तो वह त्रुट्न उस तथ्य की सूचना, उसके लिपिक को जारी किये गये पहचान-पत्र के माध्यम से रजिस्ट्रार को देगा और ऐसे पत्र की प्राप्ति पर रजिस्ट्रीकृत लिपिक का नाम रजिस्टर में काट दिया जायेगा।

28. अधिकरण के काम के घटे :— नविवारों तथा अन्य सरकारी लूटिट्यों को छोड़कर अधिकरण का कार्यालय 9.30 बजे पूर्वाह्न से 6.00 बजे अपराह्न तक खुला रहेगा वशर्ते कि अध्यक्ष द्वारा कोई अन्यथा आदेश न निकाला गया हो।

29. अधिकरण की बैठक के घटे — अधिकरण (जिसके अतर्गत प्रावकाश न्यायपीठ भी है) की बैठक के घटे अध्यक्ष द्वारा अधवाय अध्यक्ष के पूर्वानुमोदन में संबंधित उपाध्यक्ष द्वारा किये गये किसी सामान्य अधवाय विशेष आदेश के अधीन रहते हुए सामान्यतया 10.30 बजे पूर्वाह्न से 1.30 बजे अपराह्न तक और 2.30 बजे अपराह्न में 5.00 बजे अपराह्न तक होंगे।

30. रजिस्ट्रार की शक्तियां और कृत्य .— (1) रजिस्ट्रार अधिकरण के अभिलेखों की अभिलेख रखेगा और ऐसे अन्य कृत्यों का जो उसे इन नियमों के अधीन या अध्यक्ष द्वारा या संबंधित न्यायपीठ के उपाध्यक्ष द्वारा अलग आदेश से गौपे जाये, प्रयोग करेगा।

(2) रजिस्ट्रार अध्यक्ष अधवाय संबंधित न्यायपीठ के उपाध्यक्ष के अनुमोदन के उपरजिस्ट्रार को रजिस्ट्रार द्वारा इन नियमों के अधीन किये जाने अधवाय प्रयोग में लाये जाने के लिये अपेक्षित किन्हीं कृत्यों अधवाय शक्तियों को प्रत्यायोजित कर सकेगा।

(3) रजिस्ट्रार की अनुपस्थिति में उप-रजिस्ट्रार, रजिस्ट्रार की सभी शक्तियों का प्रयोग तथा उसके कृत्यों को कर सकेगा।

(4) शासकीय मुद्रा (सील) रजिस्ट्रार की अभिलेख में रखी जायेगी।

(5) अध्यक्ष द्वारा किसी साधारण या विशेष निर्देश के अधीन रहते हुए अधिकरण की मुद्रा (सील), सिवाय रजिस्ट्रार या उप-रजिस्ट्रार के लिखित रूप में प्राधिकार के अधीन, किसी भी आदेश, समन या अन्य कार्यवाई पर नहीं लगायी जाएगी।

(6) अधिकरण की मुद्रा (सील) सिवाय रजिस्ट्रार या उप-रजिस्ट्रार के लिखित प्राधिकार के अधीन, अधिकरण द्वारा जारी की गई किसी भी प्रमाणित प्रति पर नहीं लगाई जाएगी।

31. मुद्रा और संप्रतीक — अधिकरण की शासकीय मुद्रा और संप्रतीक ऐसा होगा जो राज्य भरकार विनिर्दिष्ट करे।

32. अधिकरण के सदस्यों और कर्मचारीवृन्द के लिए पोशाक.— अधिकरण के सदस्यों (जिसके अतर्गत अध्यक्ष और उपाध्यक्ष भी हैं) और अधिकरण के कर्मचारीवृन्द के सदस्यों के लिए पोशाक ऐसी होंगी जो अध्यक्ष विनिर्दिष्ट करे।

33. पक्षकारों के लिए पोशाक — प्रत्येक विधि व्यवसायी या व्यापारिक प्रस्तुतकर्ता अधिकारी अधिकरण के समक्ष अपनी व्यवसायिक पोशाक में, यदि कोई हो, हाजिर होगा और यदि ऐसी कोई पोशाक नहीं है तो वहां —

- (i) यदि वह पुरुष है तो बंद गले के कोट और पेट या लाउन्च सूट में हाजिर होगा;
- (ii) यदि वह महिला है तो मादे रग की साड़ी या किसी अन्य प्रचलित पोशाक में हाजिर होगी।

परिशिष्ट क-फार्म

फार्म-1

(देखिए नियम 4)

प्रशासनिक अधिकरण अधिनियम 1985 की धारा 19 के प्रधीन आवेदन मामले का प्रीर्षकः
अनुक्रमणिका

ऋग्मि संख्या उन दस्तावेजों का घौरा जिनका पूछठ संख्या अवलंब मिया गया है

1. आवेदन पत्र
- 2.
- 3.
- 4.
- 5.
- 6.

आवेदक के हस्ताक्षर

अधिकरण के कार्यालय में प्रयोग के लिए :

फाइल करने की तारीख	या
डाक द्वारा प्राप्ति की तारीख	
रजिस्ट्रीकरण संख्या	

हस्ताक्षर
कृते रजिस्ट्रार

आनंद प्रदेश प्रशासनिक अधिकरण-न्यायपीठ
के मध्य

क.	ख.	आवेदक
और		
ग.	घ.	प्रत्यर्थी
आवेदन के घौरे		

1. आवेदक की विशिष्टियाँ :-
 - (i) आवेदक का नाम
 - (ii) पिता/पति का नाम
 - (iii) आवेदक की आय
 - (iv) पदनाम तथा उस कार्यालय के घौरे (नाम तथा स्थान) जिसमें नियुक्त है, अथवा सेवा समाप्त होने से पहले नियुक्त था
 - (v) कार्यालय का पता
 - (vi) नोटिसों की तामील का पता
2. प्रत्यर्थी की विशिष्टियाँ :-
 - (i) प्रत्यर्थी का नाम
 - (ii) पिता/पति का नाम
 - (iii) प्रत्यर्थी की आय
 - (iv) पदनाम तथा उस कार्यालय के घौरे (नाम तथा स्थान) जिसमें नियुक्त हैं

(v) कार्यालय का पता

(vi) नीटिमों की तसीह का पता

3. उम्म आदेश की जिसके विषद्ध आवेदन किया गया है, विणिटियाँ। आवेदन निम्नलिखित आदेश के विषद्ध हैं:

(i) आदेश संख्या

अनुबंध के मंवर्ष में

(ii) तारीख

(iii)द्वारा पारित किया गया

(iv) संक्षिप्त विषय

4. अधिकार की अधिकारिता:

आवेदक यह घोषणा करता है कि उम्म आदेश की जिसके विषद्ध वह प्रतिनीदि चाहता है, विषय-स्तु अधिकारण की अधिकारिता के अंतर्गत है।

5. परिसीमाएँ:

आवेदक यह और घोषणा करता है कि आवेदन प्रशासनिक अधिकारण अधिनियम, 1965 की भारा 21 में विहित परिसीमा के भीतर है।

6. मामले के नथ्य:

मामले के नथ्य नीचे दिए गए हैं :-

(गहरा क्रमानुसार नंबरों का एक मंचित क्रम है, प्रत्येक नंबर में यथा-प्रमेय निकटतम एक पृष्ठक विवादक नथ्य या अन्यथा अन्तिमपृष्ठ हो।)

7. निर्णय किए गए उपचारों के बारे में :

आवेदक यह घोषणा करता है कि उम्मने मृमांगत सेवा नियमों आदि के अधीन उम्मको उपलब्ध मर्मी उपचारों का उपयोग कर लिया है।

(गहरा किए गए प्रभावेदनों के बारे में और अन्यथों का संस्कार के मद्देस में है, शायावेदनों द्वा परिणाम क्रमानुसार है)

8. ऐसे विषय जो पहले किसी प्रत्यक्ष व्यायामय में दाथर अथवा मंचित नहीं हैं :

आवेदक यह और घोषणा करता है कि उम्मने उम्म मामले के मंवर्ष में जिसके बारे में यह आवेदन पत्र दिया है फिसी विधि व्यायामय या किसी अन्य प्राधिकारण अथवा अधिकारण वो किसी अन्य व्यायामय के ममक वहले कोई आवेदन पत्र रिट याचिका अथवा वाद न नो पहले दायर किया था तथा न हो गेसी कोई आवेदन पत्र, रिट याचिका अथवा वाद इनके भमक लम्बित है।

यदि आवेदकों ने पहले कोई आवेदन पत्र, रिट याचिका अथवा वाद दायर किया था तो उम्म म्यानिन (म्डेज) का उल्लेख करें जिस पर यह लक्षित है तथा यदि निर्णय ले लिया गया है तो अनुबंध के भंदर्में में निर्णय का भार दिया जाना चाहिए।

9. मांगे गए प्रत्यक्ष:

उपर दिए गए में विधिन को ध्यान में रखकर आवेदक निम्नलिखित अनुर्ध्व (पां) के लिए प्राप्तना करना है :-

[नीचे मांगे गए अनुर्ध्व (पां) को विनिर्वाट करें और अनुर्ध्व (पां) के आधार और ऐसे विधिक उपर्युक्तों (यदि कोई हो) को स्पष्ट करें जिनका अवलंब लिया गया है।]

10. अन्तिम आदेश, यदि उम्मके लिए प्राप्तना की गई है,

आवेदन पर ग्रन्तिम विनिष्टन लक्षित रहने तक आवेदक निम्नलिखित अन्तिम आदेश जारी किये जाने की मांग करना है।

(यहा कारण देवर उम्म अन्तिम आदेश को प्रस्तुति वा उल्लेष्ट करें त्रिगमी प्राप्तना की गई है।)

11. आवेदन पत्र पंजीकृत ताक ताक भेजे जाने की दण्ड में यह स्पष्ट किया जाए कि पत्र आवेदक प्रवेश स्तर पर सौम्बिक मूलवार्ड की आकृक्षा लरना है यदि यहाँ है तो वह व्याप्ति। पत्र लिखा है, पारदर्शक, अन्तर्देशीय पत्र भंगन करें जिस पर मूलवार्ड की तारीख के बारे में उम्मे मूलता भेजी जा सके।

12. आवेदन फीस के मंवर्ष में बैंक ड्राफ्ट/पांस्टल आईर की विणिटियाँ :

1. बैंक का नाम जिसका नाम दिया गया है।

2. भागदेश ड्राफ्ट मंख्या-

ग्रा

1. भागदेश पांस्टल ट्राईर (र०) को मंख्या

2. जारी करने वाले डॉक्यूमेंट का नाम—
3. पोस्टल आईडर (आईडरों) के जारी किए जाने की तारीख—
4. डॉक्यूमेंट पर देय है—

13. अनुलेखकों की सूची:

- 1.
- 2.
- 3.
- 4.

मत्यापन :

मैं (ग्रावेदक का नाम) पुत्र/पुत्री/पत्नी
 आयु जो काश्चान्तिय में
 के रूप में कार्य कर रहा है/रही है और जो
 का निवासी है/की निवासी है। यह मत्यापिन करता है/करती है कि
 तो तक के पैराग्राहकों की अन्वर्षम् भु में व्यक्तिगत वाल के अनुगार मही है और
 पैरा में तक की अन्वर्षम् भु को कानूनी
 सत्ताह के आधार पर मत्य ममजा जाता है यह कि मेंते किसी भी तात्त्विक तथ्य को नहीं छिपाया है।

ग्रावेदक के हस्ताक्षर

तारीख :

स्थान :

लेखा में:

रजिस्ट्रार,
आन्ध्र प्रदेश प्रशासनिक अधिकरण
हैदराबाद।

फॉर्म II

[निम्न ५(४) देखें]

पावनि रसीद

श्री/कुमारी/श्रीमती जो संक्रान्त/दिवानी/कार्यालय
 में के पद पर यथा कर रहा है/कर रही है तथा जिसका निम्न स्वाल है डारा
 केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण में दावर किए एवं इन दोनों की एतद्वारा यावती स्वीकार दी जाती है।

इने रजिस्ट्रार

आन्ध्र प्रदेश प्रशासनिक अधिकारण

स्वाक्षरीड़

तारीख :

मोहर :

आन्ध्र प्रदेश प्रशासनिक अधिकरण ने
..... ग्रावेदक का संठित

फॉर्म-III

[निम्न दोनों ६(३) देखें]

दिविन आवेदन पत्र संख्या द्वारा आवेदन पत्र संठित।

१९ राज्य स्वास्थ्य संस्थिति।

एक्स्ट्रा

ग्रावेदक

(ग्रावेदक/प्रतिवेदी)

प्रतिवेदी

(प्रतिवेदी/ग्रावेदक)

ग्रावेदक द्वारा संस्थापन

रहा ग्रावेदक द्वारा :

स्थान: (देखें क. नं.) मुक्त/निपुणी/ती इनु
 दिव्य सी एतद्वारा ना; पिय करना, हू भि कैर दे
 विष्य बल्लु विधिक लालह पर सब्द है लाल है जिसे लाल तो नहीं छिपाया है।

स्थान :

तारीख :

ग्रावेदक के अधिकार
अधिकारी (इवोट) के हस्ताक्षर

पार्ट 4

[नियम 25(2) देखिए]

लिपिक के रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन

1. विधि व्यवसायी का नाम जिसकी ओर मैं लिपिक का रजिस्ट्रीकरण किया जाना है
 2. रजिस्ट्रीकृत किए जाने वाले लिपिक की विशिष्टियाँ:

- (1) पृष्ठा न.म (बड़े प्रत्यक्षरों में)
- (2) पिता का न.म
- (3) आमुज और जन्म तिथि
- (4) जन्म स्थान
- (5) राष्ट्रीयता
- (6) शैक्षिक अहंताएँ
- (7) पूर्व लिपिक, यदि कोई है, की विशिष्टियाँ।

पासपोर्ट आकार की सत्याग्रह फोटो
चिपकाई जाए।

मैं (अगर नहीं लिपिक) यह प्रतिहा करता हूं कि मुझसे संबंधित ऊपर दी गई विशिष्टियाँ सर्व हैं।

|| लिपिक के हस्ताक्षर

3. क्या विधि व्यवसायी के पास उसके निवासन में पहले से ही कोई रजिस्ट्रीकृत लिपिक है और वह रजिस्ट्रीकृत किए जाने वाला लिपिक पहले से ही रजिस्ट्रीकृत लिपिक के स्थान पर है या उसके अतिरिक्त है।

4. क्या रजिस्ट्रीकृत किए जाने वाला लिपिक किसी अन्य विधि व्यवसायी के लिपिक के रूप में पहले से ही रजिस्ट्रीकृत है और यदि हां तो ऐसे विधि व्यवसायी का नाम।

मैं (विधि व्यवसायी) प्रमाणित करता हूं कि ऊपर दी गई विशिष्टियाँ मेरी सर्वोत्तम जानकारी और विवाद के अनुसार सही है और यह कि मुझे ऐसे किन्तु तथा की जानकारी नहीं है जिनसे लिपिक के रूप में उक्त (न.म) का रजिस्ट्रीकरण अवांछनीय हो जाएगा। मैं, मेरे हाथ समुचित इस रो रात्यापित आवेदक की पासपोर्ट प्राकार की दो फोटो प्रनियमों सहें। पहचान पत्र की कीमत के रूप में 2.50 रुपए के पोस्टल आईर संलग्न करता हूं।

सारीख :

सेवा में,

श्रीधिकरण का रजिस्ट्रार,
आन्ध्र प्रदेश प्रशासनिक अधिकरण,
.....न्यायपीठ
.....

विधि व्यवसायी के हस्ताक्षर

G.S.R. 929(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) read with clauses (d), (e) and (f) of sub-section (2) of section 35 of the Administrative Tribunals Act, 1985 (13 of 1985), the Central Government hereby makes the following rules namely:—

(1) Short title and commencement.

(1) These rules may be called the Andhra Pradesh Administrative Tribunal (Procedure) Rules, 1989.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the official Gazette.

(2) Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires:—

(a) “Act” means the Administrative Tribunals Act, 1985 (13 of 1985);

- (b) “agent” means a person duly authorised by a party to present an application or a written reply on its behalf before the Tribunal;
- (c) “applicant” means a person making an application to the Tribunal under section 19;
- (d) ‘Form’ means a form specified in Appendix ‘A’;
- (e) “Legal practitioner” shall have the same meaning as is assigned to it in the Advocates Act, 1961 (25 of 1961);
- (f) “Legal representative” means a person who in law represents the estate of the deceased;
- (g) “Registrar” means in relation to the Tribunal the Registrar appointed to the Principal Bench and in relation to each of the other Benches of the Tribunal shall mean the Registrar appointed to the particular Bench and include any officer to whom the powers

and functions of the Registrar may be delegated under clauses (2) and (3) of rule 28 ;

(h) "Registry" means the Registry of the Tribunal or of the Bench of the Tribunal as the case may be ;

(i) "Section" means a section of the Act;

(j) "Transferred application" means the suit at other proceeding which has been transferred to the Tribunal under sub-section (1) or sub-section (2) of Section 29 ;

(k) "Tribunal" means the Andhra Pradesh Administrative Tribunal established under sub-section (2) of section 4 of the Act ;

(l) the words and expression used not defined in these rules but defined in the Act shall have the same meanings respectively assigned to them in the Act.

3. Language of the Tribunal.—The language of the Tribunal shall be English :

Provided that the parties to a proceeding before the Tribunal may file documents drawn up in Telugu, if they so desire.

Provided further that (a) a Bench may in its discretion permit the use of Telugu in the proceedings. However, the final order shall be in English ;

(b) The Bench, hearing the matter, may in its discretion, direct English translation of pleadings and documents to be filed.

4. Procedure for filing applications :—

(1) An application to the Tribunal shall be presented in Form I by the applicant in person or by an agent or by a duly authorised legal practitioner to the Registrar or any other officer authorised in writing by the Registrar to receive the same or be sent by registered post with acknowledgement due addressed to the Registrar of the Bench concerned.

(2) The application under sub-rule (1) shall be presented in triplicate in a paper-book form along with one unused file size envelope bearing full address of the respondent.

(3) Where the number of respondents is more than one, as many extra copies of the application in part-book form as there are respondents together with unused file size envelope bearing the full address of each respondent shall be furnished by the applicant:

Provided that where the number of respondents is more than five, the Registrar may permit the applicant to file the extra copies of the application at the time of issue of notice to the respondents.

(4) The applicant may attach to and present with his application a receipt slip in Form II which shall be signed by the Registrar or the Officer receiving the application on behalf of the Registrar in acknowledgement of the receipt of the application.

(5) (a) Notwithstanding anything contained in sub-rules (1) to (3), the Tribunal may permit more than one person to join together and file 3 single application if it is satisfied, having regard to the cause of action and the nature of relief prayed for, that they have a common interest in the matter.

(b) Such permission may also be granted to an association representing the persons desirous of joining in a single application provided, however, that the application shall disclose the class/categories of persons on whose behalf it has been filed.

5. Presentation and scrutiny of applications :—

(1) The Registrar or the officer authorised by him under rule 4, shall endorse on every application the date on which it is presented or deemed to have been presented under that rule and shall sign the endorsement.

(2) If, on scrutiny, the application is found to be in order, it shall be duly registered and given a serial number.

(3) If the application, on scrutiny, is found to be defective and the defect noticed is formal in nature, the Registrar may allow the party to rectify the same in his presence, and if the said defect is not formal in nature, the Registrar may allow the applicant such time to rectify the defect as he may deem fit.

(4) If the applicant fails to rectify the defect within the time allowed under sub-rule (3), the Registrar may, by order and for reasons to be recorded in writing, decline to register the application and inform the applicant accordingly.

(5) An appeal against the order passed under sub-rule (4) may be referred by the person aggrieved within fifteen days from the date of such order to the Chairman in the case of Principal Bench and to the Vice-Chairman concerned, in the case of any other Bench and such appeal may be dealt with and disposed of in Chamber by the Chairman or the Vice-Chairman concerned or in their absence any Member authorised by the Chairman by special or general order, whose decision thereon shall be final.

6. Place of filing applications.—The application shall ordinarily be filed by the applicant with the Registrar of the Bench within whose jurisdiction :

- (i) the applicant is posted for the time being, or
- (ii) the cause of action has arisen, or
- (iii) the respondent or any of the respondents against whom relief is sought, ordinarily resides :

Provided that the application may be filed with the Registrar of the Principal Bench and, subject to section 25 of the Act, such application may be transmitted to be heard and disposed of by the Bench which has jurisdiction over the matter.

7. Application fee.—Every application filed with the Registrar shall be accompanied by a fee of rupees fifty to be remitted either in the form of crossed demand draft on a nationalised bank in favour of the Registrar of the concerned Bench and payable at the main Branch of that bank at the station where the seat of the said Bench is situate, or remitted through a crossed Indian Postal Order drawn in favour of the Registrar of the concerned Bench and payable at the post office of the station where the said Bench situate:

Provided that where the Tribunal permits a single application to be filed, either by more than one person or by an Association, the fee payable shall be rupees fifty :

Provided further that where the Tribunal is satisfied that an applicant is unable to pay the prescribed fee on ground of indigence, it may exempt such an applicant from the payment of fee.

8. Contents of application.—(1) Every application filed under rule 4 shall set forth concisely under distinct heads the grounds for such application. Such grounds shall be numbered consecutively. Every application, including any miscellaneous application shall be typed in double space on one side on thick paper of good quality.

(2) It shall not be necessary to present a separate application to seek an interim order or direction if in original application the same is prayed for.

(3) An applicant may, subsequent to the filing of an application under section 19 of the Act, apply for an interim order or direction. Such an application shall, as far as possible, be in Form III.

9. Documents to accompany the application.—(1) Every application shall be accompanied by a paper-book containing:—

- (i) an attested true copy of the order against which the application is filed;
- (ii) copies of the documents relied upon by the applicant and referred to in the application;
- (iii) an index of the documents.

(2) The documents referred to in sub-rule (1) may be attested by a legal practitioner or by a gazetted officer and each document shall be marked serially as Annexure A1, A2, A3 and so on.

(3) Where an application is filed by an agent, documents authorising him to act as such agent shall also be appended to the application :

Provided that where an application is filed by a legal practitioner, it shall be accompanied by duly executed 'Vakalatnama'.

10. Plural remedies.—An application shall be based upon a single cause of action and may seek one or more reliefs provided that they are consequential to one another.

11. Service of notices and processes issued by the Tribunal :—

- (1) Any notice or process to be issued by the Tribunal may be served by any of the following modes directed by the Tribunal :—
 - (i) service by the party himself ;
 - (ii) by hand delivery (Dasti) through a process server ;
 - (iii) by registered post with acknowledgement due; or
 - (iv) through the head of the department concerned by any one of the above modes.
- (2) Where notice issued by the Tribunal is served by the party himself by 'hand delivery' (Dasti), he shall file with the Registry of the Tribunal, the acknowledgement, together with an affidavit of service.
- (3) Notwithstanding anything contained in sub-rule (1) the Tribunal may taking into account the number of respondents and their places of residence or work and other circumstances, direct that notice of the application shall be served upon the respondents in any other manner, including any manner of substituted service, as it appears to the Tribunal just and convenient.
- (4) Notwithstanding anything done under sub-rule (1), the Tribunal may in its discretion, having regard to the nature and urgency of the case, direct the service of the notice on the Standing Counsels appointed as such by the State Government or any Department of the State Government.
- (5) Every notice issued by the Tribunal shall, unless otherwise ordered, be accompanied by a copy of the application along with a copy of the paper-book.
- (6) Every applicant shall pay a fee for the service or execution of processes, in respect of an application where the number of respondents exceeds five, as under :—
 - (i) a sum of rupees five for each respondent in excess of five respondents; or
 - (ii) where the service is in such a manner as the Tribunal may direct under sub-rule (3) such a sum, not exceeding the actual charges incurred in effecting the service, as may be determined by the Tribunal.
- (7) The fee for the service or execution of processes under sub-rule (3) shall be remitted in the manner prescribed in rule 7 within one week of the date of the order determining the fee or within such extended time as the Registrar may permit.
- (8) Notwithstanding anything contained in sub-rules (1) to (4), if the Tribunal is satisfied that it is not reasonably practicable to serve notice of application upon all the respondents, it may, for reasons to be recorded in

writing, direct that the application shall be heard notwithstanding that some of the respondents have not been served with notice of the application :

Provided that no application shall be heard unless,

- (i) notice of the application has been served on the Central Government or the State Government, if such Government is a respondent;
- (ii) notice of the application has been served on the authority which passed the order against which the application has been filed; and
- (iii) the Tribunal is satisfied that the interests of the respondents on whom notice of the application has not been served are adequately and sufficiently represented by the respondents on whom notice of the application has been served.

12. Filing of reply and other documents by the respondents :—

- (1) Each respondent intending to contest the application, shall file in triplicate the reply to the application and the documents relied upon in paper book form with the Registry within one month of the service of notice of the application on him.
- (2) In the reply filed under sub-rule (1), the respondent shall specifically admit, deny or explain the facts stated by the applicant in his application and may also state such additional facts as may be found necessary for the just decision of the case. It shall be signed and verified as a written statement by the respondent or any other person duly authorised by him in writing in the same manner as provided for in Order VI rule 15 of the Code of Civil Procedure, 1908 (5 of 1908).
- (3) The documents referred to in sub-rule (2) shall also be filed along with the reply and the same shall be marked as R1, R2, R3 and so on.
- (4) The respondent shall also serve a copy of the reply along with documents as mentioned in sub-rule (1) on the applicant or his legal practitioner, if any, and file proof of such service in the Registry.
- (5) The Tribunal may allow filing of the reply after the expiry of the prescribed period.

13. Date and place of hearing to be notified.—The Tribunal shall notify to the parties the date and the place of hearing of the application in such manner as the Chairman may by general or special order direct.

14. Sittings of the Tribunal.—The Tribunal shall ordinarily hold its sittings at Hyderabad.

Provided that the Benches of the Tribunal shall be in such places as the State Government may, by notification, specify :

Provided that if at any time, the Chairman of the Tribunal is satisfied that circumstances exist which render it necessary to have sittings of the said Bench at any place falling within its territorial jurisdiction, other than the place or places at which it ordinarily sits, the Chairman may direct that the Bench shall hold its sittings at any such appropriate place for such period as may be specified.

15. Full Bench.—A full Bench shall be a Bench of any number not less than three of the members and the following matters may be heard and determined by a Full Bench, namely :—

- (i) matters involving the interpretation of any of the provisions of the Andhra Pradesh Public Employment (Organisation of Local Cadres and Regulations of Direct Recruitment) Order, 1975 or any order made thereunder;
- (ii) all matters arising out of the integration of any services of the State consequent on the provisions of the States Reorganisation Act, 1956 (37 of 1956);
- (iii) any other matter which is assigned to, or referred to, it. Provided that in such case or cases where the Chairman, having regard to the nature of the questions involved, is of the opinion that it requires to be decided by a Full Bench of more than 2 Member, he may be so by general or special orders, as he may deem fit.

16. Calendar of cases :—

- (1) Each Bench shall draw up a calendar for the hearing of transferred cases and, as far as possible, hear and decide the cases according to the calendar.
- (2) Every application shall be heard and decided, as far as possible, within six months from the date of its registration.
- (3) The Tribunal shall have the power to decline an adjournment and also to limit the time for oral arguments.

17. Action on application for applicant's default :—

- (1) Where on the date fixed for hearing of the application or on any other date to which such hearing may be adjourned, the applicant does not appear when the application is called for hearing, the Tribunal may, in its discretion, either dismiss the application for default or hear and decide it on merit.
- (2) Where an application has been dismissed for default and the applicant files an application within thirty days from the date of dismissal and satisfies the Tribunal that there was sufficient cause for his non-appearance when the application was called for hearing, the Tribunal shall make an order setting aside the order dismissing the application and restore the same :

Provided, however, where the case was disposed on merits the decision shall not be responded except by way of review.

18. Ex-Parte hearing and disposal of application :—

- (1) Where on the date fixed for hearing the application or on any other date to which such hearing may be adjourned, the applicant appears and the respondent does not appear when the application is called for hearing, the Tribunal may, in its discretion adjourn the hearing or hear and decide the application ex-parte.
- (2) Where an application has been heard ex-parte against a respondent or respondents, such respondent or respondents may apply to the Tribunal for an order to set it aside and if such respondent or respondents, satisfy the Tribunal that the notice was not duly served, or that he or they were prevented by any sufficient cause from appearing when the application was called for hearing the Tribunal may make an order setting aside the ex-parte hearing as against him or them upon such terms as it thinks fit, and shall appoint a day for proceeding with the application :

Provided that where the ex-parte hearing of the application is of such nature that it cannot be set aside as against one respondent only it may be set aside as against all or any of the other respondent also :

Provided further that in cases covered by sub-rule (8) of rule 11, the Tribunal shall not set aside ex-parte hearing of an application merely on the ground that it was not served upon a respondent or respondents.

19. Review of application to be filed within thirty days.—No application for review shall be entertained unless it is filed within thirty days from the date of the order of which the review is sought.

20. Substitution of legal representatives :—

- (1) In the case of death of a party during the pendency of the proceeding before the Tribunal, the legal representatives of the deceased party may apply within thirty days of the date of such death for being brought on record as necessary parties.
- (2) Where no application is received from the legal representatives within the period specified in sub-rule (1), the proceedings against the deceased party shall abate :

Provided that on good and sufficient reasons the Tribunal, on an application, may set aside the order of abatement and substitute the legal representatives.

21. Adjournment of hearing.—The Tribunal may if sufficient cause is shown at any stage of proceedings grant time to the parties or any of them, and adjourn the hearing of the application. The Tribunal may make such order as it thinks fit with respect to the costs occasioned by the adjournment.

22. Order to be signed and dated :—

- (i) Every order of the Tribunal shall be in writing and shall be signed by the Member or Members constituting the Bench, which pronounced the order.
- (ii) The orders shall be pronounced in open court.

23. Publication of orders.—Any order of the Tribunal deemed fit for publication in any authoritative report or the press may be released for such publication on such terms and conditions as the Chairman or the Vice-Chairman concerned may specify by general or special order.

24. Communication of orders to parties :—

- (1) Every interim order granting or refusing or modifying interim relief and final order passed on any application shall be communicated to the applicant and to the respondent concerned either by hand delivery or by registered post free of cost.
- (2) If the applicant or the respondent to any proceeding requires a copy of any document or proceeding the same shall be supplied to him on such terms and conditions on payment of such fees as may be fixed by the Chairman by general or special order.

25. Inspection of the records :—

- (1) The parties to any case or their Counsel may be allowed to inspect the record of the case on making an application in writing to the Registrar.
- (2) Subject to such terms and conditions, as may be prescribed by the Chairman by a general or special order a person who is not a party to the proceeding may also be allowed to inspect the proceedings after obtaining the permission of the Registrar in writing.

26. Orders and directions in certain cases.—The Tribunal may make such orders or give such directions as may be necessary or expedient to give effect to its orders or to prevent abuse of its process or to secure the ends of justice.

27. Registration of legal practitioner's clerk :—

- (1) No clerk employed by a legal practitioner shall act as such in the Tribunal or be permitted to have access to the records and obtain copies of the orders of the Bench of the Tribunal in which the legal practitioner ordinarily practises unless his name is entered in the Register of clerks maintained by the said Bench. Such clerk shall be known as a "Registered Clerk".
- (2) A legal practitioner desirous of registering his clerk shall make an application to the Registrar in Form IV. On such application being allowed by the Registrar, his name shall be entered in the Register of Clerks.

(3) After registration of the clerk, the Registrar shall direct the issue of an identity card to him which shall be non-transferable and shall be produced by the holder upon request by an officer or other employees of the Tribunal authorised in this behalf. The identity card shall be issued under the signature of the Deputy Registrar of the Bench concerned.

(4) A register of all the clerks registered under sub-rule (2) shall be maintained in the office of the Registrar of each Bench.

(5) A legal practitioner shall have at a time not more than two registered clerks unless the Registrar by general or special order otherwise permits.

(6) Whenever a legal practitioner ceases to employ a registered clerk, he shall notify the fact at once to the Registrar by means of a letter enclosing therewith the identity card issued to his clerk by the registry, and on receipt of such letter the name of the said registered clerk shall be struck off from the register.

28. Working hours of the Tribunal.—Except on Sundays and other public holidays, the office of the Tribunal shall, subject to any order made by the Chairman, remain open from 9.30 AM to 6 PM.

29. Sitting hours of the Tribunal.—The sitting hours of the Tribunal (including a vacation Bench) shall ordinarily be from 10.30 a.m. to 1.30 p.m. and 2.30 p.m. to 5 p.m. subject to any general or special order made by the Chairman, or by Vice-Chairman concerned with the prior approval of the Chairman.

30. Powers and functions of the Registrar :—

- (1) The Registrar shall have the custody of the records of the Tribunal and shall exercise such other functions as are assigned to him under these rules or by the Chairman or the Vice-Chairman of the Bench concerned by separate order.
- (2) The Registrar may, with the approval of the Chairman or of the Vice-Chairman of the Bench concerned delegate to the Deputy Registrar any function or power required by these rules to be performed or exercised by the Registrar.
- (3) In the absence of the Registrar, the Deputy Registrar may exercise all the powers and functions of the Registrar.
- (4) The official seal shall be kept in the custody of the Registrar.
- (5) Subject to any general or special direction by the Chairman, the seal of the Tribunal shall not be affixed to any order, summons or other process save under the authority in writing of the Registrar or the Deputy Registrar.
- (6) The seal of the Tribunal shall not be affixed to any certified copy issued by the Tribunal save under the authority in writing of the Registrar or the Deputy Registrar.

31. Seal and emblem.—The official seal and emblem of the Tribunal shall be such as the State Government may specify.

32. Dress of the Members and staff of the Tribunal.—The dress for the Members of the Tribunal (including Chairman and Vice-Chairman) and Members of the staff of the Tribunal shall be such as the Chairman may specify.

33. Dress of the parties.—A legal practitioner or, as the case may be, a presenting officer shall appear before the Tribunal in his professional dress, if any and if there is no such dress :—

- (i) if a male, in a closed collared coat and trousers or in a lounge suit;
- (ii) if a female, in a saree or any other customary dress of a sober colour.

[No. A-11019|9|88(ii)-AT]

APPENDIX A FORM

FORM I

(See rule 4)

APPLICATION UNDER SECTION 19 OF THE ADMINISTRATIVE TRIBUNALS ACT, 1985

Title of the Case :

INDEX

S. No.	Description of documents relied upon	Page No.
1.	Application	
2.		
3.		
4.		
5.		
6.		

Signature of the applicant

For use in Tribunal's Office

Date of filing

or

Date of Receipt by post

Registration No.

Signature for Registrat.

IN THE ANDHRA PRADESH ADMINISTRATIVE TRIBUNAL —————— BENCH

A B APPLICANT
AND

C D RESPONDENT

DETAILS OF APPLICATION :

1. Particulars of the applicant :

- (i) Name of the applicant
- (ii) Name of the Father/Husband
- (iii) Age of the applicant

(iv) Designation and particulars of office (name and station) in which employed or was last employed before ceasing to be in service.

(v) Office address

(vi) Address for service of notices

2 Particulars of the respondent :

(i) Name of the respondent :

(ii) Name of Father/Husband

(iii) Age of the respondent

(iv) Designation and particulars of office (name and station) in which employed

(v) Office address

(vi) Address for service of notices.

3. Particulars of the order against which application is made.

The application is against the following order :—

(i) Order No. with reference to Annexure

(ii) Date

(iii) Passed by

(iv) Subject in brief

4. Jurisdiction of the Tribunal .

The applicant declares that the subject matter of the order against which he wants redressal is within the jurisdiction of the Tribunal.

5. Limitation :

The applicant declares that the subject matter of is within the limitation prescribed in section 21 of the Administrative Tribunals Act, 1985.

6. Facts of the case :

The facts of the case are given below :—

(Give here a concise statement of facts in a chronological order, each paragraph containing as nearly as possible a separate issue, fact or otherwise).

7. Details of the remedies exhausted :

The applicant declares that he has availed of all the remedies available to him under the relevant service rules, etc.

(Give here chronologically the details of representations made and the outcome of such representation with reference to the Annexures numbers).

8. Matters not previously filed or pending with any other Court.

The applicant further declares that he had not previously filed any application, writ petition or suit regarding the matter in respect of which this application has been made, before any court of law or any other authority or any other Bench of the Tribunal and nor any such application, writ petition or suit is pending before any of them.

In case the applicant had previously filed any application, writ petition or suit, the stage at which it is pending and if decided the gist of the decision should be given with reference to the Annexure.

9. Relief(s) sought

In view of the facts mentioned in para 6 above the applicant prays for the following relief(s) :—

(Specify below the relief(s) sought explaining the ground for relief(s) and the legal provisions (if any) relied upon).

10 Interim order, if any prayed for :

Pending final decision on the application, the applicant seeks issue of the following interim order :—

(Give here the nature of the interim order prayed for with reasons)

11 In the event of application being sent by Registered Post, it may be stated whether the applicant desires to have oral hearing at the admission stage and if so he shall attach a self-addressed Post Card/Inland Letter at which intimation regarding the date of hearing could be sent to him.

12. Particulars of Bank Draft/Postal Order in respect of the Application Fee :

1 Name of the Bank on which drawn

2 Demand Draft No.

Or

1. Number of Indian Postal Order(s)

2 Name of the issuing Post Office

3 Date of Issue of Postal Order(s)

4 Post Office at which payable

13 List of enclosures

1

2.

3.

4

VERIFICATION

I (Name of the applicant) S/O, D/O, W/O age..... working as in the office of resident of do hereby verify that the contents of paras. to are true to my personal knowledge and para to believed to be true on legal advice and that I have not suppressed any material fact

Signature of the applicant

Dated :

Place :

To

The Registrar,
Andhra Pradesh Administrative Tribunal,
HYDERABAD

FORM II

(See Rule 4(4))

RECEIPT SLIP

Receipt of the application filed in the Central Administrative Tribunal

Bench by Shri Kum.|Smt. working as in the Ministry|Department|Office of residing at is hereby acknowledged.

for Registrar
Andhra Pradesh Administrative Tribunal

Date :

Seal :

IN THE ANDHRA PRADESH ADMINISTRATIVE TRIBUNAL

(See rule 8(3)

Misc. Application No. of
in

Original

Transferred Application No. of 19.
XXX Applicant
(Applicant|Respondent)

Vs.

YYY Respondent
(Respondent|Applicant)

Brief facts leading to the application :

Relief or Prayer :

Verification :

I.....(Name of the applicant) S/o, D/o, W/o..... age..... working as in the office of resident of
.....do hereby verify that the contents para to are true on legal advice and that I have not suppressed any material fact.

Signature of applicant
Signature of the Advocate

Place :

Date :

FORM IV

(See rule 25(2)

APPLICATION FOR THE REGISTRATION OF A CLERK

1. Name of legal practitioner on whose behalf one clerk is to be registered.

2. Particulars of the clerk to be registered.

Attested passport size photograph to be pasted

(i) Full name :
(in capital)

(ii) Father's Name :

(iii) Age and Date of Birth :

(iv) Place of birth :

(v) Nationality

(vi) Educational qualifications :

(vii) Particulars of previous employment, if any :

I..... (Clerk above named) do hereby affirm that the particulars relating to me given above are true.

(Signature of Clerk)

3. Whether the legal practitioner has a clerk already registered in him employ and whether the clerk sought to be registered is in lieu of or in addition to the clerk already registered.

4. Whether the clerk sought to be registered is already registered as a clerk of any other legal practitioner and if so, the name of such practitioner.

I.....(legal practitioner) certify that the particulars given above are true to the best of my information and belief and that I am not aware of any fact which would render unsuitable the registration of the said.....(name) as a clerk. Further, I enclose Postal Order for Rs. 2.50 being the cost of Identity Card alongwith 2 passport size photographs of the applicant duly attested by me.

Signature of legal practitioner

Date :

To

The Registrar,
Andhra Pradesh Administrative Tribunal,
HYDERABAD.

सा.का.नि. ९३०(ग्र) - केन्द्रीय सरकार, भारतीय प्रशासनिक अधिकरण अधिनियम, १९८५ (१९८५ का १३) की धारा ३५ की उपधारा (२) के खण्ड (ग) के मान पठिन्, उपधारा (१) द्वारा प्रदत्त शक्तिया का प्रयोग करने हुए निम्नलिखित नियम तबाही से, ग्रथित हैं।

१. मकान नाम और प्रारम्भ -(१) इन नियमों का मंधिल नाम आनंदप्रदेश प्रशासनिक अधिकरण (अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और सदस्यों के बेतन और भत्ते तथा भेवा की शर्त) नियम, १९८९ है।

२. ये गजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवत्त होंगे।

२ परिभाषाएँ - इन नियमों में जब तक कि संदर्भ में अन्यथा अपेक्षित न हो :-

(क) "अधिनियम" से प्रशासनिक अधिकरण अधिनियम, १९८५ (१९८५ का १३) अभिप्रेत है।

(ख) "सरकार" से आनंद प्रदेश सरकार अभिप्रेत है।

(ग) "अधिकरण" से आनंद प्रदेश प्रशासनिक अधिकरण अभिप्रेत है।

(घ) इस नियमों में जो ग्रदं तथा अभिव्यक्तियां प्रयुक्त
की गई हैं परन्तु जिन्हें यहां परिभाषित नहीं किया
गया है और अधिनियम में परिभाषित किया गया
है उसका ग्रंथ क्रमशः यहां होगा जो अधिनियम
में दिया गया है।

3. वेतन :—(1) अध्यक्ष आठ हजार रुपए का वेतन
तथा पाँच रुपए का विलेप वेतन प्रति मास प्राप्त करेगा।
उपाध्यक्ष आठ हजार रुपए का वेतन प्रति मास प्राप्त करेगा।
सदस्य रु. 7300-100-7600 के वेतनमान में प्रतिमास
का वेतन प्राप्त करेगा।

परन्तु किसी ऐसे व्यक्ति के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या सदस्य
के रूप में नियुक्ति की दशा में जो किसी उच्च न्यायालय
के न्यायाधीश के रूप में सेवा निवृत्त हुआ है या जो केन्द्रीय
सरकार या किसी राज्य सरकार से हुआ है या जो केन्द्रीय
सरकार या किसी राज्य सरकार से हुआ है या जो पेशन और/या उपदान, अभिदायी भविष्य निधि में
नियोजक के अभिदाय के रूप में कोई सेवा निवृत्ति फायदे या
अन्य प्रकार के सेवा निवृत्ति फायदे प्राप्त कर रहा है
या कर चुका है या प्राप्त करने का हकदार हो
गया है, तो पूर्वोक्त वेतन में से उसके द्वारा प्राप्त
या प्राप्त की जाने वाली पेशन और उपदान की
ममतुल्य पेशन या अभिदायी भविष्य निधि में नियोजक
के अभिदाय या किसी अन्य प्रकार के सेवानिवृत्ति फायदों
यदि कोई हो, की कुल रकम कम कर दी जाएगी।

4. मंहगाई भत्ता और नगर प्रतिपुर्नि भत्ता —अध्यक्ष, उपाध्यक्ष
या और कोई सदस्य उनके वेतन के अनुसृप्त उर्ही दरों पर
मंहगाई भत्ता और नगर प्रतिपुर्नि भत्ता। प्राप्त करने का हकदार
होगा जो, केन्द्रीय सरकार में रु. 7300-100-7600 या
उससे अधिक वेतनमान में वेतन प्राप्त करने वाले गम्भीर
“क” के अधिकारियों का अनुज्ञेय है।

5. सदस्य के रूप में नियुक्ति पर मूल सेवा से सेवानिवृत्ति:—
(1) अध्यक्ष या उपाध्यक्ष या कोई सदस्य जो अधिकारण
में अपनी नियुक्ति की तारीख को केन्द्रीय सरकार या किसी
राज्य सरकार के अधीन सेवा में था अधिकारण में अपनी
नियुक्ति के पूर्व ऐसी सेवा से निवृत्ति ले नेगा। किसी उच्च
न्यायालय के किसी ऐसे आशीर्वाद न्यायाधीश की दशा में जिसे अध्यक्ष
या उपाध्यक्ष के रूप में नियुक्ति किया गया है, अधिकारण
में उसकी सेवा संविधान की दूसरी अनुसूची के भाग (ब)
के पैरा ii (ख) (i) के अलगते वास्तविक सेवा मानी
जाएगी।

(2) उप नियम (1) में यथा उपविनियम सेवा निवृत्ति
पर अध्यक्ष, उपाध्यक्ष अथवा कोई सदस्य —

- (i) उसको लागू सेवा निवृत्ति प्रमुखियाओं से संबंधित
नियमों के प्रत्यारूप पेशन और उपदान प्राप्त करने
का हकदार होगा,
- (ii) उपाजित छुट्टी प्रयोगान्त करने के लिए अनुज्ञात
नहीं होगा किंतु अपनी नवा निवृत्ति के पूर्व

उसके लागू नियमों के छुट्टी सम्बलम् यदि कोई
हो, के समतुल्य नकद रकम प्राप्त करने का हकदार
होगा।

6. छुट्टी:—(1) अधिकारण में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या
किसी सदस्य के रूप में नियुक्ति पर कोई अधिक निम्नलिखित
रूप में छुट्टी प्राप्त करने का हकदार होगा।

(i) सेवा के प्रत्येक पूरे वर्ष या उसके किसी भाग के
लिए 15 दिनों की दर पर उपाजित छुट्टी

(ii) सेवा के प्रत्येक पूरे वर्ष की वावन 20 दिन की
दर पर चिकित्सा प्रमाणपत्र या निर्जी काम के
प्राधार पर आधा वेतन छुट्टी। आधा वेतन छुट्टी
के लिए सम्बलम् उपाजित छुट्टी के दोगुन अनुज्ञाप
छुट्टी सम्बलम् के आधार पर समतुल्य होगा।

(iii) भदस्य के विरोक्तानुभाव आधार वेतन पर छुट्टी
को पूरे वेतन सहित छुट्टी में परिवर्तित किया
जा सकता है परन्तु वह चिकित्सा आधारों पर
नी गई हो और सभी नियमित्या प्राधिकारी के
चिकित्सांय प्रमाणपत्र डाग समर्थित की गई हो

(iv) पद की एक ग्रन्थि में एक साथ स्सी दिनों की
अधिकतम कालावधि तक वेतन प्रीर भले के
बिना अमाधारण छुट्टी।

(2) यदि अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या कोई सदस्य अधिकारण
के साथ अपनी कार्य व्यवस्था के कारण पूर्ण प्रावकाश का
उपभोग करने में अमर्य है, तो वह प्रावकाश की अनुपायक
कालावधि वो छुट्टी के लिए में जोड़ने का हकदार होगा।

स्पष्टीकरण: इस उपनियम के प्रयोगान के लिए “प्रावकाश”
न प्रतिकरण शारा माने जाने वाले प्रत्येक कानौण्ड तर्फ ग
नीय दिन की प्रावकाश प्रभित है।

(3) अधिकारण में अपनी पदावधि की समाप्ति पर
अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या कोई सदस्य प्रपने नाम में जमा उपाजित
छुट्टी की बिना छुट्टी सम्बलम् ते समतुल्य नकद प्राप्त
करने का हकदार होगा, परन्तु इस उपनियम और नियम
5 के उपनियम (2) (ii) के अधीन छुट्टी की भावा जिसकी
नकद रकम प्राप्त की गई है दो सौ नार्वाय दिनों से अतिक
नहीं होगी।

(4) अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और सदस्य अधिकारण से पदमुक्त
होने की तारीख को प्रवृत्त दरों पर उपनियम (3) के अधीन
यथाअनुज्ञेय छुट्टी सम्बलम् पर मंहगाई भत्ता प्राप्त करने के
हकदार होंगे।

परन्तु वह ऐसे छुट्टी वेतन पर नगर प्रतिकरात्मक भत्ता
या किसी प्रत्येक भत्ता का हकदार नहीं होगा।

7. छुट्टी मंजर करने वाला ग्राधिकारी:— किसी सदस्य
और उपाध्यक्ष की छुट्टी मंजर करने के लिए सभी प्राप्ति
कारी अध्यक्ष होगा। अध्यक्ष को छुट्टी मंजर करने के लिए
गज्जपात सभी प्राधिकारी होगा।

8. पेशन :— (1) अध्यक्ष उपाध्यक्ष या किसी सदस्य के रूप में अधिकरण में नियुक्त प्रत्येक व्यक्ति पेशन का हकदार होगा परन्तु ऐसी पेशन देय नहीं होगी—

(i) यदि उसमें अधिकरण में दो वर्ष में वाम सेवा की है ; या

(ii) यदि उसे अधिनियम की धारा 9 की उपाधारा

(2) के अधीन अधिकरण में किसी पद से हटाया गया है ।

(2) उपनियम (1) के अधीन पेशन प्रत्येक पूरे सेवा वर्ष या उसके किसी भाग के लिए जात सी रुपए प्रति वर्ष की दर पर संग्रहित की जाएगी और अधिकरण में सेवा वर्ष की संख्या पर द्यान दिए बिना, पेशन की अधिकतम रकम 3500/- रुपए प्रति वर्ष में अधिक नहीं होगी :

परन्तु इस नियम के अधीन देय पेशन की कूल रकम ऐसी पेशन जिसके अन्तर्गत राराशिकृत पेशन का भाग, यदि कोई भी रकम सहित, जो अधिकरण में पद धारण करने समय प्राप्त की गई है, या जिसकी प्राप्त करने के लिए हकदार है उच्च न्यायालय न्यायाधीश के नियमितिंष्ट पेशन की अधिकतम रकम से अधिक नहीं होगी ।

9. भविष्य निधि :— अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या कोई सदस्य भविष्य निधि में अपने विकला पर अभिदाय करने का ही हकदार होगा और उनके ऐसा विकला होने की दशा में अधिक भारतीय सेवा (भविष्य निधि) नियमावधी, 1955 के उपबन्धों में शामिल होगा :

परन्तु यदि अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या कोई सदस्य अधिकरण में प्रश्ना कार्यभार संभालने के लिए पूर्वी किसी उच्च न्यायालय का न्यायाधीश था या शासित भारतीय सेवा का सदस्य था या केन्द्रीय अधिकार किसी राज्य सरकार के शासीन बोर्ड एवं धारण किए हुए था, तो वह ऐसे नियमों से जासित होगा जो अधिकरण में कार्यभार संभालने के लिए दूर वर्ष उसको आगे था ।

10. यात्रा भत्ते :— अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या सदस्य दौरे पर या स्थानान्तरण पर जिसके अन्तर्गत अधिकरण में कार्यभार संभालने के लिए अधिकरण में उसकी पदाधिक का समाप्ति पर स्वनगर जाने के लिए की गई यात्रा भी है यात्रा भत्तों, दैनिक भत्तों, व्यक्तिगत भाल असत्राव और अन्य समान भीजों के परिवहन के लिए उसी मापमान और दरों पर जो उच्च न्यायालय न्यायाधीश (यात्रा भत्ता) नियम 1956 में विनिर्दिष्ट है, हकदार होगा ।

11. छुट्टी यात्रा रियायत :— अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या कोई सदस्य उन्हीं जर्ती पर छुट्टी यात्रा रियायत का हकदार होगा, जो कि रु. 7300-100-7600 या अधिक बोनसमान में बेतन पाने वाले केन्द्रीय सरकार के नमूदू “क” अधिकारियों पर लागू है ।

12. बास सुविधा :— (1) अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या किसी सदस्य के रूप में अधिकरण में नियुक्त प्रत्येक व्यक्ति, सरकार द्वारा सभय-समय पर विद्वित दरों पर अनुज्ञाप्ति फीस के मंदाय किए जाने पर उपयुक्त दाढ़िय के शासकीय निवास का उपयोग करने का हकदार होगा बताते कि ऐसा निवास स्थान उपलब्ध हो ।

(2) जब अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या किसी मदस्य को उपनियम (1) में निर्दिष्ट शासकीय निवास उपलब्ध नहीं कराया जाता है या वह उसका उपयोग नहीं करता है तो उसे उसके बेतन के पन्द्रह प्रतिशत के बगवार भन्ना प्रतिमात्र संदर्भ किया जा सकेगा ।

(3) जहाँ अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या कोई सदस्य अनुदेश अवधि के पूरे शासकीय निवारा का उपयोग करता है तो वह यथास्थिति, अतिरिक्त अनुज्ञाप्ति फीस या शास्तिक किराये का संदाय करने का दायी होगा और उसे सरकार के नियमों के अनुसार बेदब्बन कराया जा सकेगा ।

13. सेवारी सुविधा :— अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या कोई सदस्य सरकार के स्टाफ कार नियमों के अनुसार स्टाफ कार सुविधा का हकदार होगा ।

14. चिकित्सा उपचार की सुविधाएँ :— अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या कोई सदस्य चिकित्सा उपचार और अस्पताल सुविधाओं का उसी प्रकार हकदार होगा, जिस प्रकार सरकार के अधीन उसके तदनुसीरी स्मर के किसी अधिकारी को अनुग्रह होता है ।

15. अध्यक्ष या उपाध्यक्ष के रूप में नियन्त्रित उच्च न्यायालय के आसीन न्यायाधीशों की सेवा की शर्तें—इन नियमों में नियमों द्वारा के होते हुए भी जहाँ इसे उच्च न्यायालय वा कोई आसीन न्यायाधीश अधिकरण के अध्यक्ष या उपाध्यक्ष के रूप में नियुक्त विद्या जाना है तो उस पर, उच्च न्यायालय के आसीन न्यायाधीश वे रूप में उसकी अधिविधिता की तारीख तक, उच्च न्यायालय न्यायाधीश (सेवा की शर्त) अधिनियम, 1951 और उसके अधीन बनाए गए नियमों में यथा विनिर्दिष्ट रेवा शर्तें लागू होती हैं। उसके बाद वह अध्यक्ष या उपाध्यक्ष के रूप में, जैसा भी भासला हो, अपने कार्यकाल को शेष अवधि के लिए इन नियमों द्वारा शामिल होगा ।

16. अवशिष्टीय उपबन्ध :— अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या किसी सदस्य की सेवा शर्तें जिनके लिए इन नियमों में कोई अभिव्यक्ति उपलब्ध नहीं है, भारतीय प्रशासनिक सेवा के ऐसे अधिकारियों, जिनका कि बेतन उनके बराबर है, पर उस समय लागू नियमों और आदेशों द्वारा अवधारित की जाएगी ।

17. नियमों को विशिल करने की जकित :— केन्द्रीय सरकार द्वारा, इन नियमों के विनियोग उपबन्धों को लिया वर्ग या प्रवर्ग के व्यक्तियों की वाक्ता विधिन करने की जकित होगी ।

[रा. 11019/9/88-(iii)ए.टी.]

श्रीमती रा०यी८ वल्ला जी० कुट्टी, अवर सचिव

G.S.R. 930(E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) read with clause (c) of sub-section (2) of Section 35 of the Administrative Tribunals Act, 1985 (13 of 1985), the Central Government hereby makes the following rules, namely :—

1. Short title and commencement.—(1) These rules may be called the Andhra Pradesh Administrative Tribunal (Salaries and Allowances and Conditions of Service of Chairman, Vice-Chairman and Members) Rules, 1989.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. Definitions.—In these rules, unless the context otherwise requires :—

- (a) "Act" means the Administrative Tribunals Act, 1985 (13 of 1985);
- (b) "Government" means the Government of Andhra Pradesh;
- (c) "Tribunal" means the Andhra Pradesh Administrative Tribunal;
- (d) the words and expressions used in these rules and not defined, but defined in the Act shall have the meanings, respectively assigned to them in the Act.

3. Pay.—(1) The Chairman shall receive a pay of rupees eight thousand plus a special pay of rupees five hundred per mensem. A Vice-Chairman shall receive a pay of rupees eight thousand per mensem. A Member shall receive a pay in the scale of Rs. 7300-100-7600 per mensem :

Provided that in the case of an appointment as Chairman, a Vice-Chairman or a Member of a person who has retired as a judge of a High Court or who has retired from service under the Central Government or a State Government and who is in receipt of or has received or has become entitled to receive any retirement benefits by way of pension and/or gratuity, employer's contribution to the Contributory Provident Fund or other forms of retirement benefits, the aforementioned pay shall be reduced by the gross amount of pension and pension equivalent of gratuity or employer's contribution to the Contributory Provident Fund or any other form of retirement benefits, if any, drawn or to be drawn by him.

4. Dearness allowance and city compensatory allowance.—The Chairman, a Vice-Chairman and a Member shall receive dearness allowance and city compensatory allowance appropriate to their pay at the rates admissible to Group 'A' Officers of the Central Government drawing a pay in the scale of Rs. 7300-100-7600 or above.

5. Retirement from parent service on appointment as Member.—(1) The Chairman, a Vice-Chairman, or a Member who, on the date of his appointment to the Tribunal, was in service under the Central Govt. or a State Govt., shall seek retirement from such service before his appointment to the Tribunal. In the case of a sitting Judge of a High Court who is appointed as Chairman

or a Vice-Chairman, his service in the Tribunal shall be treated as actual service within the meaning of para 11(b)(i) of Part 'D' of the Second Schedule to the Constitution.

(2) On such retirement as is provided for in sub-rule (1), the Chairman, a Vice-Chairman or a Member :

- (i) shall be entitled to receive pension and gratuity in accordance with the rules relating to the retirement benefits applicable to him;
- (ii) shall not be allowed to carry forward earned leave but shall be entitled to receive cash equivalent to leave salary, if any, in accordance with the rules applicable to him prior to his retirement.

6. Leave.—(1) A person, on appointment to the Tribunal as Chairman, a Vice-Chairman or a Member shall be entitled to leave as follows :—

- (i) earned leave at the rate of fifteen days for every completed year of service or a part thereof;
- (ii) half pay leave on medical certificate or on private affair, at the rate of twenty days in respect of each completed year of service. The leave salary for half pay leave shall be equivalent to half of the leave salary admissible during the earned leave;
- (iii) leave on half pay can be commuted to full pay leave at the discretion of the individual provided it is taken on medical grounds and is supported by a medical certificate from the competent medical authority;
- (iv) extraordinary leave without pay and allowance up to a maximum period of one hundred eighty days in one term of office.

(2) If the Chairman, a Vice-Chairman or a Member is unable to enjoy full vacation on account of his occupation with the Tribunal, he shall be entitled to add the un-enjoyed period of vacation to the leave account.

Explanation.—For the purpose of this sub-rule, "Vacation" means vacation of thirty days in each calendar year observed by the Tribunal.

(3) On the expiry of his term of office in the Tribunal, the Chairman, a Vice-Chairman or a Member shall be entitled to receive cash equivalent of leave salary in respect of the earned leave standing to his credit provided that the quantum of leave encashed under this sub-rule (2)(ii) of rule 5 shall not exceed 240 days.

(4) The Chairman, a Vice-Chairman and Member shall be entitled to receive the dearness allowance on the leave salary under sub-rule (3) as admissible at the rates in force on the date of the relinquishment of the office in the Tribunal :

Provided that he shall not be entitled for the City compensatory allowance or any other allowance on such leave salary.

7. Leave sanctioning authority.—The Chairman shall be the authority competent to sanction leave to the Member and the Vice-Chairman. The Governor shall be the authority competent to sanction leave to the Chairman.

8. Pension.—Every person appointed to the Tribunal as the Chairman or a Member shall be entitled to pension provided that no such pension shall be payable :

(i) if he has put in less than two years of service with the Tribunal, or

(ii) if he has been removed from an office in the Tribunal under sub-section (2) of Section 9 of the Act.

(2) Pension under sub-rule (1) shall be calculated at the rate of rupees seven hundred per annum for each completed year of service or a part thereof and irrespective of the number of years of service in the Tribunal, the maximum amount of pension shall not exceed rupees three thousand and five hundred per annum :

Provided that the aggregate amount of pension payable under this rule together with the amount of any pension including commuted portion of pension (if any) drawn or entitled to be drawn while holding office in the Tribunal shall not exceed the maximum amount of pension prescribed for a judge of the High Court.

9. Provident Fund.—The Chairman, a Vice-Chairman or a Member shall be entitled to subscribe to the Provident Fund at his option and in case of his opting shall be governed by the provisions of the All India Services (Provident Fund) Rules :

Provided that if the Chairman a Vice-Chairman or a Member was a Judge of a High Court or was a Member of an All India Service or was holding a post under the Central or a State Government immediately before his joining the Tribunal, he shall be governed by the rules which were applicable to him immediately before joining the Tribunal.

10. Travelling Allowances.—The Chairman, a Vice-Chairman or a Member while on tour or on transfer (including the journey undertaken to join the Tribunal or on the expiry of his term with the Tribunal to proceed to his home town) shall be entitled to the Travelling Allowance, daily allowance, transportation of personal effects and other similar matters at the same scales and at the same rates as are prescribed in the High Court Judges (Travelling Allowance) Rules, 1956.

11. Leave Travel Concession.—The Chairman, a Vice-Chairman or a Member shall be entitled to the leave travel concession at the same rates and the same scales on the same conditions as are applicable to a Group A officers of the Central Govern-

ment drawing a pay in the scale of Rs. 7300-100-7600 or above.

12. Accommodation.—(1) Every person appointed to the Tribunal as Chairman, Vice-Chairman or a Member shall be entitled to the use of official residence of appropriate type, subject to availability on the payment of licence fee at the rates prescribed by Government from time to time.

(2) When the Chairman, Vice-Chairman or a Member is not provided with or does not avail himself of the official residence referred to in sub-rule (1), he may be paid every man an allowance of an amount equal to fifteen per cent of his pay.

(3) Where the Chairman, Vice-Chairman or a Member occupies an official residence beyond the permissible period he shall be liable to pay additional licence fee or penal rent, as the case may be, and liable to eviction in accordance with the rules of the Government.

13. Facility of conveyance.—The Chairman, a Vice-Chairman or a Member shall be entitled to the facility of staff car in accordance with the Staff Car Rules of the Government,

14. Facilities for Medical Treatment.—The Chairman, a Vice-Chairman and a Member shall be entitled to medical treatment and hospital facilities as are admissible to an officer of the corresponding status in the Government.

15. Conditions of service of sitting judges of the High Court appointed as Chairman or Vice-Chairman.—Notwithstanding anything contained in these rules, where a sitting judge of a High Court is appointed as the Chairman or a Vice-Chairman of the Tribunal, the service conditions as contained in the High Court Judges (Conditions of Service) Act, 1954 and the rules made thereunder shall apply to him, upto the date of his superannuation as a sitting judge of the High Court. Thereafter, he shall be governed by these rules for the remaining period of his tenure as Chairman or Vice-Chairman, as the case may be.

16. Residuary Provision.—The conditions of service of the Chairman, a Vice-Chairman or a Member for which no express provision is available in these rules shall be determined by the rules and orders for the time being applicable to officers of corresponding pay levels belonging to the Indian Administrative Service.

17. Powers to relax rules.—The Central Government shall have the power to relax the provisions of any of these rules in respect of any class or categories of persons.

[No. A-11019/9/88(iii)-AT]
Smt. P. V. VALSALA, G. KUTTY, Under Secy.